Delhi Metropolitan Education

Affiliated to GGSIP University, New Delhi & Approved by Bar Council of India

CIFFI2020 का पांचवा दिन सौमित्र चटर्जी को समर्पित

Ref no: 010/CIFFI-2/20 Date: November17, 2020

नोएडा: शैक्षणिक संस्थानों द्वारा विश्व के पहले सात दिवसीय हाइब्रिड अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव CIFFI 2020 के पांचवे दिन एक विशेष सत्र (जूरी चर्चा), 2 पैनल डिस्कशन और CIFFI-2020 की आधिकारिक वेबसाइट पर 'नमस्ते ' और 'गांधी का सपना' जैसी 27 फिल्में ऑनलाइन प्रस्तुत की गई। महोत्सव का आयोजन दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन के डीएमई मीडिया स्कूल में डीकिन यूनिवर्सिटी, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया के सहयोग से हो रहा है।

दिन की शरुआत एक विशेष सत्र (जूरी चर्चा) से हुई जिसका संचालन डॉ अम्बरीष सक्सेना, फेस्टिवल डायरेक्टर और डीन डीएमई मीडिया स्कूल, दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन, नोएडा ने किया और मुदिता राज, एकेडमिक एसोसिएट, डीएमई मीडिया स्कूल द्वारा सत्र को होस्ट किया गया।

श्री अशोक पुरांग, क्रिएटिव प्रोड्यूसर, हिंदी फीचर फिल्म फिल्मिस्तान ने फिल्म निर्माण के लिए स्क्रिप्ट को सबसे महत्वपूर्ण बताया। उन्होंनें कहा भारत में व्यवस्थित ढंग से स्क्रिप्ट लेखन की पढ़ाई पर ध्यान देने की जरूरत है। विद्यार्थियों को फिल्म फेस्टिवल में जाना चाहिए और डॉक्यूमेंट्री बनाते समय अपने टीचरों से स्क्रिप्ट में हेल्प लेनी चाहिए, जिससे एक बेहतर से बेहतर डॉक्यूमेंट्री बन सके।

श्री पंकज राकेश, लेखक और फ़ोटोग्राफ़र, प्रोडक्शन प्रमुख, मेटालाइट फिल्म्स, मुंबई ने कहा की मीडिया के सभी छात्रों को फिल्म बनानी चाहिए और तरह-तरह के सिनेमा से जुड़े रहना चाहिए।

श्री निमिष कपूर , हेड, साइंस फिल्म डिवीजन, विज्ञान प्रसार ने विद्यार्थियों को अपनी नॉलेज को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा विद्यार्थियों को ज्यादा से ज्यादा जर्नल्स, रिसर्च पेपर पढ़ने चाहिए जिससे एक अच्छी स्क्रिप्ट बन सके। उन्होंनें कहा विज्ञान सिर्फ फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी तक सीमित नहीं है, साइंस हर जगह है और इसके बहुत ज्यादा स्कोप है।

डॉ विक्रांत किशोर, फेस्टिवल डायरेक्टर CIFFI2020 और कोर्स डायरेक्टर, फिल्म टेलीविजन एंड एनीमेशन, स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन एंड क्रिएटिव आर्ट्स, डीकिन यूनिवर्सिटी, मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया ने कहा हमें स्टोरी टेलिंग के नए-नए तरीके ढूंढने चाहिए उन्होंनें विद्यार्थियों को कहा कि हमें इक्विपमेंट्स पर ज्यादा जोर नहीं देना चाहिए क्योंकि आज के समय में मोबाइल से भी फिल्म बन सकती है ।

इस बात पर डॉ अम्बरीष सक्सेना ने बताया कि जब वे डीकन यूनिवर्सिटी गए थे तो उन्होंने वहां विश्व के सबसे अच्छी कैमरा देखे ।

डॉक्टर सुस्मिता बाला, प्रोफेसर और प्रमुख, डीएमई मीडिया स्कूल नोएडा ने कहा अगर स्क्रिप्ट पर अधिक से अधिक काम किया जाए तो फिर हम कुछ भी कर सकते हैं। स्क्रिप्ट के लिए रिसर्च और टीचर्स की हेल्प लेना से वह और भी बेहतर बन सकती है।

'फिल्म मेकिंग अस ए टूल फॉर एनवायरनमेंट कम्युनिकेशन' विषय पर एक पैनल डिस्कशन

दिन का दूसरा सत्र 'फिल्म मेकिंग अस ए टूल फॉर एनवायरनमेंट कम्युनिकेशन' पर आधारित था। सत्र का संचालन श्री आनंद झा, वरिष्ठ प्रबंधक-समन्वय, मीडिया स्टडीज (CMS) ने किया। श्री प्रमोद कुमार पांडेय असिस्टेंट प्रोफेसर, डीएमई मीडिया स्कूल ने सत्र होस्ट किया गया था।

पर्यावरण पर फिल्मों के महत्व को बताते हुए, डॉ अम्बरीष सक्सेना ने कहा की, "पर्यावरण के महत्व को संप्रेषित करने के लिए अधिक प्रभावी माध्यम नहीं हो सकता है।"

श्री जलाल जिलानी, पर्यावरण फिल्म निर्माता और सुश्री आरती श्रीवास्तव, डॉक्यूमेंट्री फिल्मकार सत्र के लिए पैनेलिस्ट थे।

सत्र की शुरुआत सुश्री श्रीवास्तव की फिल्म 'व्हाइट नाइट' की तस्वीरों से हुई। जिसके बाद उन्होंने कहानी के पीछे के विचार और उस पर काम करने के अपने अनुभव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने पर्यावरण पर फिल्मों के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा, “ज्यादातर लोग पर्यावरणीय चुनौतियों से अवगत नहीं हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि पर्यावरण पर फिल्में दर्शकों द्वारा देखी जाएं ”।

कश्मीर में पर्यावरण फिल्में बनाने की चुनौतियों के बारे में बात करते हुए, श्री जीलानी ने कहा, "यदि आप जो करना चाहते हैं, उसे करने का इरादा और दम है, तो आपके लिए अवसर खुले है।" उन्होंने अपनी फिल्म 'सेविंग द सेवियर' का एक छोटा हिस्सा भी प्रस्तुत किया। उन्होंने आगे एक गोरिल्ला फिल्म निर्माता के रूप में काम करने के अपने अनुभव साझा किया।

डॉ बाला ने सत्र के समापन के विचार साझा किए। उसने कहा, "हमें प्रकृति के बारे में सोचना चाहिए और उसकी देखभाल करनी चाहिए।"

सौमित्र चटर्जी पर पैनल डिस्कशन

दिन का अंतिम सत्र 'सौमित्र चटर्जी: ऐन एक्टर एंड बियॉन्ड' विषय पर आधारित था। सत्र में भारतीय सिनेमा के दिवंगत अभिनेता, निर्देशक, नाटककार, लेखक और कवि सौमित्र चटर्जी को याद किया गया। इसकी अध्यक्षता सुश्री गायत्री चटर्जी, फॉर्मर फैकल्टी, डायरेक्शन, FTII, पुणे द्वारा की गई। सुश्री रुक्मिणी सेन, पत्रकार, पटकथा लेखक, न्यूयॉर्क फिल्म अकादमी प्रशिक्षित फिल्म निर्माता द्वारा सत्र का संचालन किया गया।

सौमित्र चटर्जी पर उनकी बायोपिक फिल्म के बारे में बात करते हुए, श्री परमब्रत चटर्जी, भारतीय फिल्म अभिनेता और निर्देशक ने कहा कि, “किसी व्यक्ति पर कुछ बनाने के लिए उस व्यक्ति के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान होना ज़रूरी है"।

श्री रंगन चक्रवर्ती, पटकथा लेखक और फिल्म निर्देशक ने चर्चा में कहा कि, “अपने जीवन और अपने काम में, सौमित्र बहुत निपुण थे। इसके अलावा, बंगाली भाषा का इस्तेमाल करने के तरीके में भी मुख़र थे।

भारतीय फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक, उपन्यासकार और निर्माता श्री सुब्रत सेन ने कहा, “बंगाली उच्चारण फिल्मों कि सफतलता लिए आवश्यक नहीं है। स्क्रीन पर दमदार उपस्थिति ज़रूरी है। "

श्री निलेंदु सेन, रचनात्मक निर्देशक, लेखक, टेलीविजन और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ने एक अभिनेता से सर्वश्रेष्ठ काम करवाने में एक निर्देशक की भूमिका को इंगित किया। उन्होंने आगे सौमित्र चटर्जी के साक्षात्कार के अपने अनुभव को साझा किया।

वरिष्ठ पत्रकार और भारतीय फिल्मों के विशेषज्ञ श्री अमिताभ श्रीवास्तव ने बंगाली फिल्मों के लिए अपनी रूचि को ज़ाहिर किया। सौमित्र चटर्जी पर अपनी धारणा को बताते हुए उन्होंने कहा, "उनकी कला के प्रति प्रतिबद्धता उल्लेखनीय थी।"

सुश्री गायत्री चटर्जी ने सौमित्र चटर्जी के बारे में बात की, और कहा कि, काम के प्रति उनके जूनून अद्भुत था।

डॉ अम्बरीष सक्सेना ने कहा कि फिल्म एक निर्देशक का माध्यम है। उन्होंने सत्यजीत रे, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक की फिल्मों के उदाहरणों से अपनी बात प्रस्तुत कि। उन्होंने कहा कि एक फिल्म को उस संदर्भ में देखा जाना चाहिए जिसमें इसे बनाया गया है। उन्होंने अभिनेता के रूप में सौमित्र चटर्जी में निरंतरता का तत्व बताया; समय के साथ वह बढ़ता गया लेकिन अभिनय के प्रति उसका दृष्टिकोण नहीं बदला।